वास्तविक दुनिया पर आभासी दुनिया का दबदबा हो गया

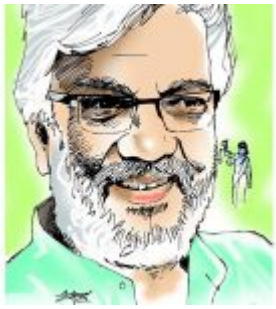

झगड़ा मनुष्य का गुण है या अवगुण इस पर कोई और टीका टिप्पणी नहीं।पर आज सूचना क्रांति के आभासी युग में शान्त और सरल स्वभाव के दुनिया भर के लोग भी घर बैठे ही झगड़ों के चक्रव्यूह में उलझे ही नहीं, निरन्तर रहने भी लगे हैं।इसी से मैंने शुरूआत में ही स्पष्ट किया कि झगड़ा, गुण है या अवगुण ,इस पर कोई बात नहीं करेगें।झगड़ा इतना तगड़ा है कि हम चाहे न चाहे यदि हम आभासी दुनिया के आदि हो गये है तो आभासी झगड़ा हमारे जीवन का अविभाज्य अंग हो गया है।यदि हम आभासी दुनिया में रचे बसे न हो तो फिर हम अपने मन के राजा है।अपन भले और अपनी दुनिया भली।इससे उलट यदि हम आभासी दुनिया में लिप्त हैं तो हमारी दशा दुनिया भर की हर छोटी बड़ी क्रिया प्रतिक्रिया की कठपुतली की तरह है।जो दूसरों की उंगलियों पर हर समय नाचती रहती है।

वास्तविक दुनिया और आभासी दुनिया में आकाश पाताल जैसा भेद है फिर भी आज की दुनिया की आबादी वास्तविक दुनिया से ज्यादा आभासी दुनिया की आदि होती जा रही है।आभासी दुनिया की चकाचौंध और तेज गति शायद आभासी दुनिया के प्रति मनुष्य के बावलेपन का मुख्यकारक हो। जीवन के प्रारम्भ से मनुष्य प्रत्यक्ष साक्षात्कार से ही वास्तविक दुनिया को जान समझ या देख पाता था।यह सब जानने समझने और देखने के लिये शरीर को हर जगह ले जाये बिना कुछ देख सुन या प्रत्यक्ष जान समझ नहीं सकते थे।

आभासी दुनिया ने दुनिया का सबसे बड़ा उलट फेर कर दिया अब किसी बात के लिये कहीं जाने की जरूरत नहीं दिन भर कहीं भी कभी भी बैठे बैठे या लेटे लेटे ,दुनियाभर की छोटी बड़ी सारी गतिविधियां, जिनका आपसे सीधा या दूर का भी कोई ताल्लुक नहीं हैं फिर भी सुबह उठने से लेकर रात सोने तक आप की अंगुलियों की गतिशीलता से आभासी रूप से आपके जीवन में हर समय हाज़िर हैं।इसका नतीज़ा हम सबको महसूस तो हो रहा है पर उसे हम जानते बूझते भी इस बात को स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं।नतीजा हमारे भौतिक जीवन का प्रवाह एक छोटे से गढ्ढे के पानी जैसा सिकुड़ गया है और मानस चौबिसों घण्टे बारहों माह आंधी तूफान की तरह हो गया और हमारी जीवन की लय ही न जाने कहां भटक गयी और हमारी सारी जीवनी शक्ति अंगुलियों में सिमट गयी।

पहले ताकतवर लोग दुनिया के लोगों को अपनी अंगुलियों के बल पर नचाने का सपना देखते थे या नचाते थे अपने साम्राज्य की सत्ता ,सेना और सम्पत्ति के बल पर।आज हम सब सूचना तकनीक के काल

में खुद ही खुद की अंगुलियों के बल पर खुद का पैसा स्वेच्छा से आदत की गुलामीवश लुटाकर नाचने लगे हैं।डरने लगे हैं ,डराने लगे हैं ,छाने लगे हैं, फूल कर कुप्पा होने लगे हैं और असमय मुरझाने लगे हैं।बैठे बैठे ही कहीं गये- मिले बगैर ही आभासी अनुयायी नहीं फालोअर बनाने लगे हैं और अपने आभासी आंकड़ों पर इतराने लगे हैं।भले ही इतनी लम्बी जिन्दगी में हमारे पास सांसों का हिसाब न हो पर सूचना तकनीक के पास हमारे पल-पल का पूरा हिसाब हैं जो हमारी अंगुलिया हर क्लिक पर दर्ज करती जा रही हैं।

सूचना तकनीक ने भले ही बहुत सारी बातों को सुगम और गतिशील बनाया हो पर हमारी निजता को छिन्न भिन्न ही नहीं सारी दुनिया की पहुंच में ला दिया है या विकास की सरकारी भाषा में कहें तो निजता का लोकव्यापीकरण कर दिया हैं। आज की दुनिया में उसी मनुष्य के पास अपनी निजता का सुख या सानिध्य हैं जो सूचना तकनीक को अपने इस्तेमाल का विषय ही नहीं मानता।अन्यथा सारी दुनिया के लोग सूचना तकनीक के साधनों के इतने अधिक आदि हो गये की सिम खत्म हुई नहीं की तत्काल रिचार्ज करवाना जैसे सांस लेने से भी अधिक जीवन की अनिवार्यता हो।उस पर भी आनन्द यह है कि सूचना तकनीक के काल से पहले दूसरे के पत्र को खोल कर पढ़ लेना न केवल बदतमीजी समझा जाता था वरन एक दूसरे की निजता को निभाना निजी और सार्वजनिक जीवन की अलिखित सभ्यता की सर्वमान्य परम्परा थी।यहां सभ्यता की सर्वमान्य परम्परा शब्द का इस्तेमाल इसलिये किया है की हमारे मानवी जीवन में असभ्यता के भी बहुत गहरे संस्कार है जिनका विस्फोट सूचना क्रांति के दौर में दिन दूना रात चौगुना होता जा रहा हैं और हम सब कुछ जानते बूझते न केवल बेखबर हैं वरन अपने गांठ का पैसा खर्च कर स्वेच्छा से अपनी निजता का विसर्जन कर रहे हैं।

सूचना तकनीक ने सब कुछ खोल दिया याने आजाद कर दिया पर निजता की आजादी को बिना पूछे हमसे छीन लिया और सब निरन्तर स्वेच्छा से भुगतान कर निजता की आजादी को समाप्त होते देख शायद इसलिये खुश हैं कि भले ही हमारी निजता की आजादी लुप्त हो गयी हो पर दूसरो की निजता में सुबह से रात तक हस्तक्षेप का आनन्द तो बिन मांगे ही मिल गया।भले ही हम अपनी आजादी की रक्षा नहीं कर पाते पर दूसरों की निजता को आभासी रूप से छीनते रहने का अंतहीन औजार तो मिल गया।इसी में पूरी दुनिया मगन हो अंतहीन असभ्यता की नयी सभ्यता का निरन्तर फैलाव कर रही है।साथ ही सब कुछ जान कर भी अनजान बन कर सूचना क्रांति को ही जीवन की अनिवार्यता की नयी आभासी सभ्यता मानने में प्राणप्रण से जुट गयी हैं । साथ ही साथ बैठे बैठे या लेटे लेटे ही जीवन के सारे व्यवहार प्रत्यक्ष कहीं जाये बगैर आभासी रूप से करके ही मगन होती जा रही है और जीवन के विराट प्रत्यक्ष स्वरूप को भुलती जा रही हैं।

प्रत्यक्ष के प्रमाण को स्वेच्छा से त्यागकर आभासी जीवन की मृगतृष्णा से आशा से ज्यादा अपेक्षा कर जीवन की प्रत्यक्ष प्राकृतिक आजादी और निजता को इतिहास में दफन कर रही हैं।जो सभ्यता अपनी आजादी और निजता की कीमत पर नयी विकसित दुनिया खड़ी करती जा रही हैं वह गतिशीलता की दौड़ में कूद तो गयी हैं पर मनुष्य जीवन के प्रत्यक्ष प्राकृतिक जीवन से अलग थलग हो कर एक भौंचक मानव समाज में बदल रही हैं। जो प्रत्यक्ष को छोड़ आभासी दुनिया का दीवाना है।प्रत्यक्ष दुनिया अपने मानवीय मस्तिष्क से हर चुनौती का हल खोजने का सामर्थ्य बताती रही है पर आभासी दुनिया का भौचक समाज आतंक भय उत्तेजना अंधानुकरण और विचारहीनता की भेड़चाल को ही एकमात्र रास्ता

मानता है जिसमें जीवन भर बिना सोचे समझे टुकुर टुकुर देखते रहना ही जीवन का एकमात्र क्रम बन जाता हैं।

हम प्रत्यक्ष दुनिया के जीवन्त मानव से आभासी दुनिया की भेड़ चाल के अंतहीन राहगीर में अपने आप को क्योंकर बदलते जा रहे हैं यही वर्तमान का खुला सवाल है।जिसे हम सब निजी और सार्वजनिक जीवन में जानते बूझते भी अनदेखा कर रहे हैं।हमारी सामूहिक चुप्पी हमें संवेदनशील मानव सभ्यता से भीड़ की असभ्यता का आदि बना चुकी हैं यही काल की सबसे बड़ी प्रत्यक्ष चुनौती है जिसका हमें अहसास भी नहीं हो पा रहा है तभी तो हम सब आभासी दुनिया में तेज रफ्तार से भागते रहने को ही जीवन मान रहे हैं।

अनिल त्रिवेदी
अभिभाषक, किसान और स्वतंत्र लेखक
त्रिवेदी परिसर ३०४/२ भोलाराम उस्ताद मार्ग ग्राम पिंपल्याराव ए.बी.रोड़ इन्दौर (म.प्र.)
Email aniltrivedi.advocate@gmail.com
Mob.n. 9329947486
Attachments area